Chap-2

द्वितीय अध्याय

गोविन्द गिल्लाभाई का साहित्य प्रदान

द्वितीय अध्याय

गोविन्द गिल्लाभाई का साहित्य प्रदान

पिछले अध्याय में स्पष्ट किया गया है कि गोविन्द गिल्लाभाई गुजरात के अत्यन्त प्रसिद्ध और सम्मानित साहित्यकार थे । उनके पिता राज्य-सरकार में वरिष्ठ पद पर नियुक्त थे और समय-समय पर उनके यहाँ प्रतिष्ठित कलाकारों तथा साहित्यकारों का आगमन होता रहता था, गोविन्द गिल्लाभाई की मुलाकात तथा परिचय उनसे हो ही जाता था ।

गोविन्दगिल्ला भाई ने अपनी सर्जनात्मक प्रतिभा के बल पर अपना प्रभावक्षेत्र हिन्दी भाषी प्रान्तों तक प्रसरित कर लिया था, सुदूर उतराखंड तक उनके कृतित्व की चर्चाएँ फैल चुकी थीं । हिन्दी ब्रजभाषा के प्रतिष्ठित और स्थापित आचार्य-कवियों में भी उनकी गणना थी।

उनके ओजस व्यक्तित्व का मूल आधार उनकी कारियित्री प्रतिभा थी । उनके वरद और श्रेष्ठ काव्य प्रदान ने साहित्य जगत में उन्हें स्थापित कर दिया था । हमारा विवेच्य विषय उनके द्वारा सम्पादित हिन्दी के अन्य साहित्यकारों की कृतियों का विवेचन करना है । प्रस्तुत अध्याय में उनके स्वयं के कृतित्व पर भी एक दृष्टि डाल लेना समीचीन प्रतीत होता है जिसके परिप्रेक्ष्य में हम उनके समग्र साहित्य प्रदान को विश्लेषित कर सकेंगे ।

ब्रजभाषा काव्य का चरमोत्कर्ष प्रभाव आधुनिक काल के प्रथम चरण तक विद्यमान रहा है, भारतेन्दु बाबू हरिश्चंद्र उस समय के समर्थ साहित्यकार थे, जिन्होंने हिन्दी गद्य विधा को अग्रसर करने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया था । उन्होंने उर्दू में ग़ज़लें भी लिखीं तथा हिन्दी खड़ीबोली में भी विपुल साहित्य की सर्जना की, साथ ही वह ब्रजभाषा के भी

प्रतिष्ठित कवि थे । उनके ब्रजभाषा छन्दों में परम्परित दीप्ति और ओज तो था ही साथ ही उनके व्यक्तित्व का दवंगपन भी विद्यवान था, जो उनकी विशिष्ट पहचान को स्थापित करता था, एक छंद ध्यातव्य है जो भारतेन्दु जी ने आत्म परिचय हेतु लिखा था -

सेवक गुनीजन के, चाकर चतुर के हैं,
कविन के मीत, हित चित गुनगानी के ।
सीधेन सों सीधे, महा बांकेन सौं बाके हम,
हरिश्चन्द नगद दमाद अभिमानी के ।
चाहिबे कि चाह ना काहू की परवाह नेही,
नेह के दिवाने, सदा सूरत निभानी के ।
सरबस रसिक के, सुदास दास प्रेमिन के,
सखा प्यारे कृष्ण के गुलाम राधा-रानी के ।[1]

गोविन्दगिल्ला भाई स्वयं ही अपने पूर्ववर्ती कवि भारतेन्दु बाबू हरिशचन्द के प्रति अगाध श्रद्धा रखते थे । उन्होंने लिखा भी है -

जिन श्री गिरिधरदास कवि, रचे ग्रंथ चालीस ।
ता सुत श्री हरिचन्द्र को को न नावावै शीश ।[2]

गोविन्दगिल्ला भाई ने स्वयं अपने भी विषय में आत्मपरिचयात्मक अनेक छंद लिखे हैं,एक छंद दृष्टव्य है -

बिमल विशाल देश काठिया सुबाड तामैं
सुंदर सिहौर पुर ओपत अंगारा है ।
बाहि में बसत हम स्वजन सहित लक्ष,
गीला भाई नंद नाम गोविन्द हमारा है ।
संवत् उन्नीस सौ पचित्तर सुयोग जोग
सावन सुक्ल पक्ष पूर्ण सोम सोम बारा है ।
''गोविंद'' करत तब संकलित सर्व करि,
पूरन प्रकाश कियौ ''गोविंद हजारा'' है ।[3]

कवि गोविंद गिल्लाभाई ने ''गोविंद हजारा'' ग्रंथ के मंगला चरण में ही अपने काव्याद्देश्य को स्पष्ट कर दिया है यथा -

मंगल के प्रयोजन में गोविंद करत चार,
एक निरविघ्न ग्रंथ पूरन के काज हैं ।
दूसरे कवीन्द्र कुलरीत अनुसार, गुनी
तींसरौ बताइबौ सु आसथा इलाज हैं ।
विनय बलित निज विश्व में बखान चौथौ ,
कारन कहत ऐसे केते कविराज हैं ।
''गोविंद''सो तीन विधि प्रथम नमस्कार,
आशिष और वस्तु निरदेश ही सराज हैं ।[4]

कविवर गोविंदगिल्ला भाई ने अपने पूर्ववर्ती कवियों एवं साहित्यकारों को श्रृद्धा के साथ स्मरण ही नहीं किया किन्तु ज्ञात, अल्पज्ञात कवियों के साहित्य को एकत्र करके अनुसंधान की दृष्टि से उन्हे संग्रहीत और संम्पादित करके एक भगीरथ प्रयत्न भी किया जो उनके प्रदान की विशिष्टता रही है ।

आधुनिक काल के प्रारंभ में चाहे खडी बोली हिन्दी का श्री गणेश हो चुका था और महावीर प्रसाद द्विवेदी जैसे महारथी सरस्वती पत्रिका के माध्यम से ब्रजभाषा कविता का विरोध करते हुए खड़ीबोली को अतिशय प्रोत्साहित कर रहे थे,किन्तु फिर भी ब्रजभाषा के किले अभी ढहे नहीं थे । सैकडों समर्थ कवियों की रचनाएँ प्रकाश में आ रही थीं, पूर्वी उत्तर प्रदेश में सीतापुर जिले के दत्त द्विजेन्द्र की कवि गोष्ठियाँ चर्चित थीं, तो काशीकवि समाज की प्रतिष्ठा भी राष्ट्रीय स्तर पर स्थापित थी । ब्रज मंडल में पढंत गोष्ठियाँ भी प्रख्यात थीं, काशी में जगन्नाथ दास रत्नाकर की मित्र मंडली थी, मथुरा में नवनीत जी कविरत्न का काव्य अखाडा था, काँकरोली नाथद्वारे में घनश्याम कवि ने मोर्चा संभाल रखा था, तो गुजरात में गोविंद गिल्लाभाई का वर्चस्व भी शिर चढ़कर बोल रहा था ।

गोविंदगिल्ला भाई ने ब्रजभाषा काव्य रचना के संदर्भ में परंपरा का ही निर्वाह अधिक किया था, उन्होंने अपने आचार्यत्व को स्थापीत करने के लिए लक्षण ग्रंथों की रचनाएँ कीं तथा अपने काव्य प्रभाव को लोकरंजकता प्रदान करने के लिए मुक्तक छंद रचे ।

यहाँ हम गोविंदगिल्ला भाई की रचनाओं को दो वर्गो में विभाजित कर सकते हैं -

1. स्वयं कवि की रचनाएँ तथा
2. कवि के द्वारा संपादित संग्रह विशेष ।

स्वयं की रचनाएँ :

कवि गोविंद गिल्लाभाई ने विपुल साहित्य की सर्जना की थी । उन्होंने स्वयं के कृतित्व को भी व्यवस्थित रूप से सम्पादित करके सुरक्षित रखा । उनका बहुत सारा साहित्य स्वयं उनके ही हस्तलेख में पांडुलिपियों के रूप में सुरक्षित है । पहले यह संग्रह भावनगर में मावजीभाई कवि के यहाँ विद्यमान था । बाद में महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष कुंवर चंद्र प्रतापसिंह के द्वारा बड़ौदा में लाकर रखा गया और सम्प्रति यह सारा साहित्य बड़ौदा में ही महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय की शाखा प्राच्यविद्यापीठ के पांडुलिपि विभाग में सुरक्षित है ।

स्वयं गोविंदगिल्ला भाई ने अपनी जिन कृतियों का नामोल्लेख किया है, उनके शीर्षक इस प्रकार हैं -

1. विष्णु विनय पच्चीसी
2. विवेक विलास
3. शिखनख चंद्रिका
4. परब्रह्म पच्चीसी
5. लच्छन बत्तीसी
6. राधा रूप मंजरी
7. भूषण मंजरी
8. शृंगार षोडशी
9. राधामुख षोडशी
10. पयोधर पच्चीसी
11. नैन मंजरी
12. छवि सरोजिनी
13. प्रबोध पच्चीसी
14. वक्रोक्ति-विनोद
15. गोविंद ज्ञान बावनी
16. पावस पयोनिधि
17. शृंगार सरोजिनी
18. षट्ऋतु वर्णन
19. प्रारब्ध पचासा
20. श्लेष चन्द्रिका
21. रत्नावली रहस्य
22. बोध बत्रीसी
23. शब्द विभूषण
24. भक्ति विभूषण
25. अन्योक्ति अरविंद
26. अलंकार अंबुधि
27. प्रवीण सागर बारह लहरें
28. समस्या पूर्ति प्रदीप
29. साहित्य चिन्तामणी प्रथम भाग किंवा नीति विनोद संग्रह
30. गोविंद हजारा संग्रह
31. प्रेम प्रभाकर संग्रह
32. साहित्य रत्नाकर संग्रह[5]

''गोविंद ग्रंथ माला'' नामक इनका ग्रंथ प्रकाशित है, इसकी भूमिका में कवि ने आत्म परिचय के रूप में आधिकारिक जानकारियाँ दी हैं। उन्होंने अपने हस्तलिखित ग्रंथो में अनेक स्थानों पर अपनी रचनाओं की सूची दी है , उपर्युक्त सूची में चार संग्रह ग्रंथों का उल्लेख है किन्तु अन्य सूची में उन्होंने जिन संग्रह ग्रंथों का उल्लेख किया है, उनका विषय स्पष्ट नहीं हो पाता, उनकी सूची इस प्रकार है :-

1. हिन्दी भाषा के फुटकर कवित संग्रह
2. ब्रजभाषा के कवित संग्रह
3. गोविंद हजारा
4. साहित्य चिन्तामणी
5. प्रेम प्रभाकर
6. कवि और कविता प्रथम भाग
7. गुनमाला के पुस्तक में
8. ब्रजसूचीकोपनिषद् पुस्तक के बारे में
9. जसराम बावनी पुस्तक के बारे में
10. भ्रान्ति भंजनी पुस्तक के बारे में
11. छुटक काव्य संग्रह पुस्तक के बारे में
12. हर्ष जी महेता कृत काव्य संग्रह पुस्तक
13. शुकरंभा पुस्तक के बारे में [6]

गोविंद गिल्लाभाई ने उपर्युक्त ग्रंथों का उल्लेख किया है, किन्तु ये ग्रंथ एक स्थान पर प्राप्त नहीं हैं, दो संग्रह ग्रंथ ''गोविंद हजारा'' तथा ''प्रेम प्रभाकर'' ही मिलते हैं। शेष के विषय में निश्चित रूप से कुछ कहा नहीं जा सकता।

इनके अतिरिक्त कवि की तीन प्रकाशित गुजराती पुस्तकों का भी उल्लेख है, जो कवि की प्राथमिक रचनाओं के रूप में सामने आती हैं -

1. विश्व दर्पण
2. कुधारा पर सुधारा की चढ़ाई
3. छिनाल बावनी

गोविंदगिल्ला भाई ने गुजराती के अतिरिक्त संस्कृत के अनेक ग्रंथो का अनुवाद किया था । उन्हीं के द्वारा दिये गये विवरण के अनुसार संस्कृत के अनूदित ग्रंथो की सूची इस प्रकार है :-

1. अमर कोष
2. अभिधान चिन्तामणी नाम माला हेम कोष
3. हेम शेष कोश
4. काव्य प्रकाश प्रथम उल्लास
5. साहित्य दर्पण प्रथम तीन परिच्छेद
6. भानुदत्त कृत रस तरंगिणी
7. ताराचंद्र तर्करत्न कृत शृंगार रत्नाकर
8. गंगाराम कृत रसमीमांसा
9. कवि रत्नाकर कृत वक्रोक्ति पंचाशिका
10. अमर शतक
11. चौर पंचाशिका
12. वज्र सूची कोपनिषद् शंकराचार्य कृत
13. वात्सायन काम सूत्र की अनुक्रमणिका [7]

कवि रत्न गोविंदगिल्ला भाई ने कुछ विशिष्ट हिन्दी के कवियों की प्रमुख कृतियों पर टीकाएँ भी तैयार की थीं । इन ग्रंथों के नाम इस प्रकार है :-

1. प्रबोध पच्चीसी की टीका
2. वक्रोक्ति विनोद की टीका
3. श्लेष चन्द्रिका की टीका [8]

गुजराती भाषा में हिन्दी ग्रंथों की टीकाएँ भी उन्होंने की हैं यथा-

1. प्रवीण सागर की गोविंद सुबोधनी टीका
2. किशन बावनी की टीका
3. शिवराज शतक की टीका
4. शिवराज भूषण की टीका
5. रसराज की टीका[9]

कवि गोविंद गिल्लाभाई ने अनेक कोष ग्रंथों का भी सम्पादन किया था, इनकी सूची इस प्रकार है :-

1.	एकाक्षरी कोश	2.	अनेकाकार्थ कोश
3.	रस रत्नाकर	4.	अनेकाक्षरी कोश
5.	गोविन्दकवि कोश	6.	अंक अभिधान मंजरी [10]

जिन विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में कवि गोविन्द गिल्लाभाई की रचनाएँ प्रकाशित हुई थी, कवि ने उनका विवरण इस प्रकार दिया है ।

हमीर हठावलोकन, सुदर्शन नडियाद,	(गुजराती पत्रिका)
ढोला मारू नी वार्ता, वाक्य सौंदर्य करनि	(गुजराती पत्रिका)
गोविन्द ग्रंथ माला नी साहित्य समालोचना,	
''समाज जीवन'', बम्बई	(गुजराती पत्रिका)
समस्यापूर्ति संग्रह, काशी कवि समाज	(हिन्दी पत्रिका)
समस्यापूर्ति संग्रह, कवि मण्डल काशी	(हिन्दी पत्रिका)
समस्यापूर्ति मासिक, पटना कवि समाज	(हिन्दी पत्रिका)
समस्यापूर्ति संग्रह मासिक, रसिक मित्र कानपुर	(हिन्दी पत्रिका)
सरस्वती, प्रसाद	(हिन्दी पत्रिका)[11]

कवि गोविन्द गिल्लाभाई ने अपने द्वारा संग्रहीत तथा सम्पादित ग्रंथों को मुद्रित कराने की योजना बनाई थी, उन्होंने इन संग्रह ग्रंथों की इस प्रकार से सूची दी है - जो प्रकाशित हुए थे -

विश्वदर्पण	(गुजराती)
कुधारा पर सुधारा की चढ़ाई	(गुजराती)
व्यभिचार निषेध बावनी	(गुजराती)
विवेक विलास	(हिन्दी)
भगवानदास निरंजनी कृत अमृतधारा	(हिन्दी)
गोविन्द ग्रंथ माला, प्रथम भाग	(हिन्दी)
प्रवीण सागर महेरामण सिंह	(हिन्दी)
किशन कवि कृत, किशन बावनी	(हिन्दी)

शिवराज शतक भूषण कवि कृत (हिन्दी)

ढोला मारूनी वार्ता (हिन्दी)

(यह सूची प्रकाशित ग्रंथों की है तथा कवि की सभी प्रकाशित पुस्तकें उपलब्ध नहीं है ।)

गोविन्दगिल्ला भाई ने अनेक गुजराती काव्य ग्रन्थों का भी सम्पादन किया था इनके नाम इस प्रकार हैं -

अखा के कवित्तो - अखा

अखै गीता - अखा

अंगद विष्ट - सामलदास

अभिमन्यु आख्यान - प्रेमानन्द

ओखा हरण - प्रेमानन्द

कर्णपर्व - विष्णुदास

कर्म गीता - महीदांस

कामवती नुं आख्यान - शिवदास

कुँवरबाई नुं मोसालुं - प्रेमानन्द

कोकशास्त्र - वात्स्यायन

गंगा माहात्म्य -

गीत गोविन्द -

गुरू शिष्य संवाद - विष्णुदास

चंद्रदासाख्यान - प्रेमानन्द

देवी कवित - श्रीधर व्यास[12]

वैसे तो ब्रजभाषा के सहस्राधिक मनीषी सिद्ध हस्त आचार्य कवि हुए हैं, जिन्होंने अपनी अप्रतिम और श्रेष्ठ काव्यकृतियों से ब्रजभाषा - साहित्य कोश को सम्पन्न किया है किन्तु अहिन्दी भाषी क्षेत्र के खवासवृत्ति की परंपरा से संलग्न आचार्य कवि गोविन्दगिल्ला भाई ने अपने वरिष्ठ साहित्य सम्पादन कार्य से अभिनव ग्रंथों को प्रकाशित किया । जो समग्र हिन्दी संसार के लिए उपादेय सिद्ध हुए ।

महाराजा सयाजी राव विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में गोविन्दगिल्ला भाई द्वारा

सम्पादित अधिकांश पांडुलिपियाँ कालक्रम सहित संग्रहीत की थीं, जो अब भी प्राच्य विद्यामंदिर बड़ौदा के हिन्दी सम्भाग में सुरक्षित हैं । गोविन्दगिल्लाभाई द्वारा सम्पादित प्राप्य प्रतियों का नामोल्लेख इस प्रकार है -

अमर चंद्रिका

दयानिधि काव्यसंग्रह

अनवर चंद्रिका

कवि जगदीश कृत काव्यसंग्रह

उध्दव-गोपी संवाद, (यमक पच्चीसी, छंद पच्चीसी, पावस वर्णन)

समस्या सार ग्रंथ

रामायण - कविचंद्र कृत

काव्य संग्रह-2 बखतार सिंह

रस विलास

सुजान विलास

विरह पच्चीसी

फाल्गुन महात्म्य

शब्द विभूषण

भूयोग

रसोदधि

रस तरंगिनी

गोविंदानंद घन

कवि कुलविनोद

शृंगार समुद्र

कान्ह कृत नखशिख

रसानन्द कृत नखशिख

रसानन्द के फुटकर कवित

भारत के राजवंश

दयावंतवत्तीसि

नखशिख

सुदामा चरित्र

भाष्य

बरवै नायीका - भेद

परतीत परिक्षा

ब्रजलीला

वियोगबेली

कृपाकन्द

रूपमंजरी

विरहमंजरी

रसमंजरी

गोविन्द गिल्लाभाई प्रशस्तियाँ

अष्टांग राजनीति

राजनीति

गिरधर की कुंडलियाँ

प्रवीणसागर

यश वर्णन

यसतरंगिणी

गोविन्दगिल्ला भाई के कवित्त

ढोलामारू की वार्ता

रस प्रकाश

कवि कुल कल्पद्रुम

भक्ति कल्पद्रुम

अन्योक्ति अरविंद

अन्योक्ति का बढास

गोविन्द ग्रंथ माला भाग -2

सुबोध शतक

वक्रोत्ति विनोद

प्रारब्ध पचासा

पावस पयोनिधि

षट्ऋतु वर्णन

गोविन्द ज्ञान बावनी

बोध बत्तीसी

श्रृंगार सरोजिनी

गोविन्द ज्ञान बावनी -2

प्रबोध पच्चीसी

शांत रसमय छंद

श्रृंगार सरोजिनी -2

षट्ऋतु वर्णन -2

गोविन्द ग्रंथ माला भाग -1

परब्रह्म पच्चीसी

गोविन्द हजारा

शब्द विभूषण

फुटकर काव्य संग्रह

निजी डायरी

बोध पच्चीसी

प्रारब्ध पचासा

विष्णु विनय पच्चीसी

परब्रह्म पच्चीसी

प्रबोध पच्चीसी, आदि ।[13]

उपर्युक्त सभी ग्रंथ प्राप्त हैं तथा सम्बन्धित अध्याय में उनके विवरण भी दिये जा रहे हैं ।

आचार्य कवि गोविन्दगिल्ला भाई के कुछ ग्रंथ ऐसे हैं, जिनका उल्लेख तो कवि ने किया है किन्तु वे ग्रंथ प्राप्त नहीं होते । इस प्रकार के ग्रंथों के नाम इस प्रकार हैं -

1. प्रेम प्रभाकर
2. साहित्य रत्नाकर
3. विश्व दर्पण (गुजराती रचना)
4. कुधारा पै सुधारा की चढाई (गुजराती)
5. छिनाल बावनी

6. अभिधान चिन्तामणी नाम माला हेमकोष अनुवाद

7. हेम शेष कोश अनुवाद 8. काव्य प्रकाश प्रथम उल्लास अनुवाद

9. साहित्य दर्पण प्रथम तीन 10. रस तरंगिणी (भानुदत्त कृत) अनुवाद

11. शृंगार रत्नाकर ताराचरण तर्क रत्न कृत अनुवाद

12. रस मीमांशा गंगाराम कृत अनुवाद

13. वक्रोक्ति पंचासिका कवि रत्नाकर कृत अनुवाद

14. ब्रज सूचिकोपनिषद शंकराचार्य कृत अनुवाद

15. वात्स्यायन कामसूत्र की अनुक्रमणिका अनुवाद

16. किशन बावनी टीका महीन अनुवाद

17. रस राज अनुवाद 18. एकाक्षरी कोश

19. अनेकार्य कोश 20. रस रत्नाकर

21. अनेकाक्षरी कोश 22. गोविन्दार्णव कोश

23. अंक अभिधान मंजरी 24. अमृतधारा

25. हमीर हठावलेकन तथा 26. साहित्य समालोचना

कुछ ग्रंथ ऐसे भी हैं जो प्राप्त तो हो ते हैं किन्तु गोविन्दगिल्ला भाई ने उल्लेख कहीं नहीं किया ।

इस प्रकार के ग्रंथों की सूची द्रष्टिव्य हैं -

1. संस्कृत श्लोकों का छंदानुवाद 2. यश वर्णन

3. फुटकर रचनाएँ 4. सुबोध शतक

5. शांत रस वैराग्य के छंद 6. चित्र काव्य संग्रह

7. अलंकारोदधि 8. पिंगल प्रकरण

9. गोविन्द गद्य साहित्य 10. काव्य निरूपण तथा

11. आशिक पच्चीसी[14]

गोविन्द गिल्लाभाई ने देश के कोने कोने से ग्रंथों की प्रतिलिपियाँ उपलब्ध कीं तथा अपने कवि मित्रों से महत्वपूर्ण काव्यसंग्रहों की प्रतिलिपियाँ तैयार भी कराई । इनमें से अनेक संग्रह तो अब तक अज्ञात ही हैं । इन संग्रह ग्रंथों की सूची से आ. कवि गोविन्दगिल्ला भाई के शोधपरक दृष्टिकोण का भी परिचय मिलता है । ग्रंथ सूची इस प्रकार है -

संग्रह ग्रंथ

	ग्रंथ का नाम	कविसंख्या	संग्रह कर्ता
1.	साहित्य सिंधु	91	बेनीदास
2.	श्रृंगार सिंधु	50	भगवानदास
3.	कवित्त रत्नमालिका	19	रसरासि रामनारायण
4.	गोविन्दानंद घन	87	रसिक गोविन्द
5.	अलंकार आशय	66	उत्तमचंद्र
6.	कवि दर्पण	26	ग्वाल
7.	कवि वल्लभ	13	हरिचरनदास
8.	नखशिख	41	अज्ञात
9.	सरस रस	17	लालकवि
10.	अलंकार रत्नाकर	63	दलपत वंशीधर
11.	अनुपम भूषण	24	सरदार कवि
12.	फुटकर कवित्त	159	गोविन्दगिल्ला भाई
13.	गोविन्द हजारा	141	गोविन्दगिल्ला भाई
14.	साहित्य चिन्तामणि	225	गोविन्दगिल्ला भाई
15.	प्रेम प्रभाकर	65	गोविन्दगिल्ला भाई
16.	कवि और कविता (प्रथम भाग)	415	गोविन्दगिल्ला भाई
17.	कवि और कविता (द्वितिय भाग)	200	गोविन्दगिल्ला भाई
18.	गुनमालाके पुस्तक में	40	गोविन्दगिल्ला भाई
19.	वज्रश्चकोपनिषद के बारे में	65	गोविन्दगिल्ला भाई
20.	जसराजबावनी के बारे में	40	गोविन्दगिल्ला भाई
21.	छूटक काव्य संग्रह	83	गोविन्दगिल्ला भाई
22.	हर्षजी महेताकृत काव्यसंग्रह	40	गोविन्दगिल्ला भाई
23.	शुकरंभा के बारे में	15	गोविन्दगिल्ला भाई
24.	कविनामावली जोधपुर	760	मुंशी देवीप्रसाद
25.	कविनामावली सिहौर	2317	गोविन्दगिल्ला भाई
26.	श्रृंगार संग्रह	125	सरदार कवि

27.	श्रृंगार सुधारक कवित	187	द्विज मन्नाभाई
28.	सुंदरी सर्वस्व सवैया	108	द्विज मन्नाभाई
29.	श्रृंगार सरोज दोहा	100	द्विज मन्नाभाई
30.	सुधासर वृंदावन	105	नवीन कवि
31.	सुंदरी तिलक	70	हरिशचंद्र
32.	रस कुसुमाकर	90	प्रतापसिंहजी
33.	हफीजुल्लाखाँ हजारा	261	हफीजुल्लाखाँ
34.	षट्ऋतु हजारा	222	प्रेमानन्द
35.	नखशिख हजारा	160	प्रेमानन्द
36.	राजरसनामृत	117	देविप्रसाद
37.	कवि रत्नमाला	201	देविप्रसाद
38.	मनोमंजरी (प्र.भाग)	51	नकछेदीतिवारी
39.	मनोमंजरी (द्वि.भाग)	95	नकछेदीतिवारी
40.	मनोमंजरी (तृ.भाग)	71	नकछेदीतिवारी
41.	मनोमंजरी (च.भाग)	57	नकछेदीतिवारी
42.	विज्ञान मार्तण्ड	34	नकछेदीतिवारी
43.	वीरोल्लास	54	नकछेदीतिवारी
44.	भडौवा संग्रह (प्र.भाग)	68	नकछेदीतिवारी
45.	भडौवा संग्रह (द्वि.भाग)	62	नकछेदीतिवारी
46.	भडौवा संग्रह (तृ.भाग)	24	नकछेदीतिवारी
47.	भडौवा संग्रह (च.भाग)	61	नकछेदीतिवारी
48.	श्रृंगार चंद्रिका	41	नकछेदीतिवारी
49.	भक्तिभाल टीका	152	प्रियादास
50.	कवि वचन सूक्ति	-	हरिशचंद्र
51.	पावसभूषण	50	धनश्याम
52.	पावस संग्रह	-	हरिशचंद्र
53.	पावस प्रमोद	50	नानकचंद्र
54.	मनोरंजन संग्रह	102	गौरीशंकर

55.	माधव विलास	65	माधव प्रसाद
56.	काव्य कला हरिशचंद्र	51	साहब प्रसाद
57.	काव्य शिरोमणी	55	कुन्दन लाल
58.	रसिक मंजरी	55	कृपरसलाल
59.	काव्य संग्रह पचांग	22	गंगासुत
60.	काव्य रत्नाकर	59	बनवारीलाल
61.	काव्य संग्रह	90	गोवर्धन
62.	काव्य कलामिनी सीताराम	-	सीताराम
63.	शिशिर सुष्मा	-	मथुरा से
64.	शिवसिंह सरोज	-	शिवसिंह सेगर
65.	कवि कीर्ति कलानिधी	-	नकछेदी तिवारी
66.	सुजान सरोज	91	सुजान कवि
67.	गोपीप्रेम पीयूष	-	नवनीत चौबे
68.	ऊधौ गोपी शतक	20	घनश्याम
69.	सभाविलास	18	घनश्याम
70.	मनोरंजन काव्य	21	घनश्याम
71.	प्रेम तरंग	-	मन्नालाल
72.	समस्यापूर्ति संग्रह	-	राव माताप्रसाद
73.	काशी कविसमाज की समस्यापूर्ति (प्र.भाग)का	38	कवि समाज
74.	काशी कविसमाज की समस्यापूर्ति (द्वि. भाग)का	50	कवि समाज
75.	काशी कविसमाज की समस्यापूर्ति (तृ. भाग)का	54	कवि समाज
76.	काशी कविसमाज की समस्यापूर्ति (च. भाग)का	38	कवि समाज
77.	काशी कवि मण्डल की पूर्ति	-	गो. कन्हैयालालजी
78.	पटना कवि समाज की पूर्ति, आदि	-	गो. कन्हैयालालजी[15]

इसके अतिरिक्त श्री गोविन्द गिल्लाभाई की अन्य साहित्यिक प्रवृत्तियाँ भी थीं । मिश्र बंधुओं नें उपकृत शब्दों में गोविन्दगिल्ला भाई के साहित्य सहयोग के प्रति आभार व्यक्त किया है, तथा इनके सहसाधिक संग्रहीत ग्रंथों का भी उल्लेख किया है । मिश्रबन्धु - विनोद के सृजन काल में भी गोविन्दगिल्ला भाई की महत्वपूर्ण जानकारी भरी सूचनाओं का भी मिश्रबन्धुओं ने

उल्लेख किया है ।[16] गोविन्द गिल्लाभाई ब्रजभाषा के आचार्य कवि थे, उनके आचार्यत्व को प्रगट करने के लिए उनकी गोविन्द ग्रंथमाला की सम्पादित कृतियाँ ही पर्याप्त हैं । डॉ. मालारविन्दम् ने भी गोविन्द गिल्लाभाई द्वारा रचित निम्नलिखित ग्रंथों का उल्लेख किया है, यथा

भक्ति कल्पद्रुम

अन्योक्ति अरविन्द

गोविन्द ग्रंथमाला भाग-4

गोविन्द ज्ञान बावनी

पावस पयोनधि

षट्ऋतु वर्णन

शब्द विभूषण

सुबोध शतक

वक्रोक्ति विनोद

प्रारब्ध पचासा

पावस पयोनिधि

गोविन्द ज्ञान बावनी -2

बोध बत्तीसी

श्रृंगार सरोजिनी

प्रबोध पच्चीसी

शांत रस वैराग्य के फुटकर छंद

विवेक विलास

गोविन्द हजारा

शब्द विभूषण

चित्रकाव्य संग्रह

काव्य-डायरियाँ

विष्णु विनय पच्चीसी

नीति विनोद के छंद

भूषण मंजरी

शिवनख चंद्रिका

राधा रूपमंजरी

समस्या पूर्ति प्रदीप

प्रवीण सागर की अंतिम लहरें

अलंकारोदधि

अमरू शतक टीका

चौरपचासि का टीका

पिंगल प्रकीर्ण

काव्य निरूपण

साहित्य चिन्तामणी

कवि चरित्र, आदि[17]

उपर्युक्त ग्रंथों का प्रणयन या सम्पादन कवि गोविन्दगिल्ला भाई ने किया था; उनके विस्तृत काव्य सृजन ने ही उन्हें राष्ट्रीय स्तर पर ब्रजभाषा के प्रतिष्ठित कवियों कि पंक्ति में स्थापित कर दिया था । आचार्यत्व के लिए उन्होंने लक्षणग्रंथों की रचना की, नायिका भेद षड्ऋतु वर्णन बारहमासा आदि विषयों पर शास्त्रीय ढंग से काव्य रचना की, काव्यत्व के गुण तथा दोषों पर विचार किया, छंद रचना की आचार संहिता को स्पष्ट किया और ब्रजभाषा कवियों के गढ़ में जाकर समस्यापूर्ति आदि की रचनाएँ करके अपनी प्रतिभा के बल पर ख्याति अर्जित की ।

अहिन्दी भाषी क्षेत्र में रहते हुए भी ब्रजभाषा के संस्कार उनमें गहरे पैठे हुए थे, छंद पर उनकी पकड़ थी, उक्ति वैचित्र्य का प्रयोग करके अभिनव प्रयोग किये थे ।

डॉ. मालारविन्दम के शब्द में गोविन्द गिल्लाभाई ने जिन ग्रंथों का प्रकाशन एवं सम्पादन किया है, उनकी भूमिका भी लिखी है, उन्होंने रचना के लेखक तथा उसकी कृति आदि के विषय में विस्तार से विचार किया है तथा उनके विषय में विभिन्न विद्वानों के मतों को उद्धृत कर उनकी समीक्षा की है और अपना स्वतंत्र मत व्यक्त किया है । इस दृष्टि से शिवराज शतक की उनकी भूमिका देखी जा सकती है । जिसमें उन्होंने विवेचनात्मक लेख आदि लिखे थे ।

इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि गोविन्द गिल्लाभाई ने अपने समकालीन हिन्दी के आचार्यो के समान हिन्दी साहित्य का प्रकाशन, सम्पादन तो किया है, उसकी विवेचनात्मक

भूमिका तथा लेख आदि लिखकर गुजरात में उन्हें सर्वजन सुलभ भी बनाया है, इस प्रकार उन्होंने न केवल हिन्दी साहित्य के उद्धार में अपना सक्रिय योगदान दिया वरन् गुजरात में आधुनिक हिन्दी की सभी धाराओं का प्रचार भी किया । वस्तुतः वे गुजरात में आधुनिक और रीतिकालीन हिन्दी साहित्य के प्रतिनिधि थे ।[18]

अधिकांश काव्य कृतियाँ परपंरावादी होते हुए भी उनमें गोविन्दगिल्ला भाई की विशिष्ट प्रतिभा का द्योतन अवश्य होता है । अपने कृतित्व के माध्यम से वह एक कुशल आचार्य कवि, समालोचक., विश्लेषक, सम्पादक, संग्रह कर्ता तथा अनुसंधान कर्ता थे । उन्होंने अपने विरल तथा साहित्य सृजन से हिन्दी संसार में अपना विशिष्ट स्थान बना लिया था । यही कारण है कि चाहे काँकरोली, नाथद्वारा का कवि समाज हो, काशी का कवि मण्डल हो, मथुरा का ब्रज साहित्य मण्डल हो सर्वत्र उनका वर्चस्व स्थापित था, समस्यापूर्तियों में भी उन्हें सम्मान पूर्वक स्मरण किया जाता था । कवि ग्वाल, नवनीत, रत्नाकर, प्रभृति कवियों ने उन्हें समय-समय पर सम्मान प्रदान किया था । इनके कृतित्व में ब्रजभाषा काव्य के मूल तत्व विद्यमान थे, कहीं भी भाषा या भाव में आरोपण अनुभव नहीं होता था ।

काव्य प्रवृत्ति

आचार्य कवि गोविन्द गिल्लाभाई के काव्य की अनेक विशिष्ट प्रवृतियाँ दृष्टिगोचर होती हैं, मुख्य रूप से उनका काव्य या तो प्रबन्धात्मक है या फिर मुक्तक । प्रबन्धात्मक काव्य में महाकाव्य तथा प्रबन्ध काव्य आते हैं, मुक्तक काव्य के अंतर्गत स्फुट कवित्त सवैया तथा सम्पादकीय साहित्य आता है ।

मुक्तक काव्य में भक्ति तथा शृंगार का प्राधान्य रहा है । देश भर में गोविन्दगिल्ला भाई की ख्याति उनकी मुक्तक शृंगार काव्य के कारण थी ।

ब्रजभाषा में मुक्त शृंगार की स्वछंद धारा संस्कृत से अधिग्रहीत है । संस्कृत में यह अविधारा प्राकृत साहत्यि से निस्सृत हुई है । वास्तव में प्राकृत साहित्य की स्वछंद काव्यधारा साहित्य के श्रृंगार काव्य के अधिक निकट है ।[19]

संसार भर में काव्य का मूल विषय न्यूनाधिक रूप में शृंगार समन्वित ही रहा है । संसार के साहित्य में शृंगार काव्य धारा किसी न किसी रूप में मिल अवश्य जाती है,[20] क्योंकि मानसिक एवं शारीरिक रूप सर्वत्र समान रहता है अद्यापि प्रत्येक देश और काल अपनी रीति से उसको समझाता हैं ।[21] भारतीय साहित्य में श्रृंगार का प्रवेश कुछ विद्वानों ने भक्ति से माना

है ।[22] गोविन्द गिल्लाभाई में शृंगार काव्य परोक्ष या प्रत्यक्ष किसी न किसी रूप में भक्ति से सम्बद्ध अवश्य रहा है । वैसे तो कुछ विद्वानों ने रीतिकालीन श्रृंगार काव्य प्रवृत्ति का प्रारंभ ही भक्ति कालीन युगल लीलाओं के शृंगार वर्णन के प्रभाव से ही माना है ।[23] किन्तु भक्त कवियों के शृंगार वर्णन में भावात्मक भेद या दृष्टिगत भेद स्पष्टतः आभाषित होता है ।[24] भारतीय साहित्य में शृंगार की अक्षुण्य परंपरा वैदिक काल से ही समाविष्ट है, इसे नकारा नहीं जा सकता ।[25]

आचार्य कवि गोविन्दगिल्ला भाई का शृंगार काव्य सगुणोपासक भक्त कवियों के शृंगार वर्णन से अनुप्रेरित जान पड़ता है । अधिकांश आधुनिक काल के ब्रजभाषा कवियों के शृंगार काव्य में भक्ति का समन्वयन भक्ति कालीन सगुणोपासक कवियों की शृंगार पदावलियों से ही अनुप्रेरित जान पड़ता है[26] और इसी परंपरा में गोविन्द गिल्लाभाई के शृंगार काव्य को स्वीकार कर सकते हैं ।

शृंगार काव्य में तीन प्रकार की प्रमुख प्रवृत्तियाँ पाई जाती हैं -

रीतिबद्ध शृंगार काव्य

रीतिसिद्ध शृंगार काव्य, तथा

रीतिमुक्त शृंगार काव्य[27]

आचार्य कवि गोविन्द गिल्लाभाई के काव्य सृजन में उपर्युक्त तीनों प्रवृतिया पाई जाती हैं । रीतिबद्ध रूप में उन्होंने काव्य शास्त्रीय आधार पर महाकाव्यादि ग्रंथ रचे । रीतिमुक्त होकर उन्होंने शृंगार के मुक्तक छंदो की सृष्टि की ओर रीतिसिद्ध हो कर उन्होंने अपने संग्रह काव्य को शास्त्रीयता की सहज सीमाओं में निबद्धित रखा ।

गुजरात में शृंगार निष्ठ ब्रजभाषा काव्य का सृजन प्रारंभ से ही होता रहा है ।[28] गोविन्द गिल्लाभाई का कृतित्व रीतिकालीन हिन्दी कवियों से न केवल प्रभावित था बल्कि रीतिकालीन कविता उनके लिए आदर्श बन गई थी । इस के मुख्य दो कारण थे एक तो गोविन्दगिल्ला भाई ने रीतिकाव्य पर व्यापक शोधकार्य किया था । अनेक रीति ग्रंथो का संकल एवं सम्पादन किया था तथा दूसरे उनकी रूचि एवं प्रवृत्ति भी इसी रीतिकाव्य के प्रति थी । गोष्ठियों, सभाओं तथा समारोहों में रीत काव्य की ऊहात्मक वृति श्रोताओं को अधिक आनन्दित करती थी तथा कवि को अन्यत्र सराहना मिलती थी । इसी कारण गोविन्दगिल्ला भाई का रूझान शृंगार काव्य के लिए अधिक रहा था ।

श्रृंगार प्रधान उनके कृतित्व का विवरण इस प्रकार है ...

1.	शिखनखचंद्रिका	2.	राधारूपमंजरी
3.	राधामुख षोदशी	4.	पयोधर पच्चीसी
5.	नैनमंजरी	6.	छबि मंजरी
7.	समस्यापूर्ति प्रदीप	8.	श्रृंगार सरोजिनी
9.	प्रवीणसागर कीश बारह लहरी	10.	अन्यलक्षण ग्रंथ

ग्रंथों के परिमाण के देखते हुए कहा जा सकता हुए गोविन्दगिल्ला भाई के सृजन में श्रृंगार के प्रति अधिक लगाव था उन्होंने स्वयं भी इस तत्व को स्वीकार किया है -

राजत रस श्रृंगार के आलंबन तिय अंग, तातै तिन शिखनख शुभग, वरनौ लाइउमंग

श्रृंगार वर्णन में परंपरा से प्रभावित होते हुए भी कवि ने मौलिक उदभावना और अछूती कल्पनाओं का सृजन करते हुए अपने कवि सामर्थ्य का परिचय दिया है, नयनवर्णन का छंद ध्यातव्य है -

कोऊ कहै मीन अरू कोऊ खजंन कहै,
कोऊ कहै कामही के बान वर मात है ।
कोऊ कहै कंज अरू कहे कोऊ कंजदल,
कोऊ कहे ऐन ही के नैन अवदात है ।
ऐसे अनुवाद करि नाईका के नैननि की,
उपमा अनेक विधि कोविद कहात है ।
गोविन्द पै मेरे जान बाम-तन मंदिर के,
दीपक अनूठ उभै सुन्दर सुहात है ।।

श्रृंगार में संयोग एवं वियोग दोनों ही अवस्थाओं का विस्तार से वर्णन किया गया है इस के अतिरिक्त गोविन्दगिल्ला भाई ने नीति परख काव्य का सृजन भी किया है । इस में अनेक उदाहरणों से जीवन के सत्य के प्रति, कर्तव्य के समर्पण के प्रति कवि का उपदेशात्मक स्वर मुखर रहा है यथा -

ऐसा सा रहा हैं तापे किसन अनंत आशा,
पानी में बतासा ऐसा तन का तमासा हैं ।[29]

भक्ति परक काव्य :-

रीति कवियों की भक्तिपरक कविता को कुछ विद्वानों ने कवियों का सामाजिक रक्षा कवच कहा है ।[30] आचार्यो ने ईश्वर विषयक प्रेम को भक्ति कहा है ।[31] इस तरह भक्ति में प्रेम तत्व का समन्वय अनिवार्य है और यही प्रेम तत्व काव्य में श्रृंगार भावों की निस्सृति का आधार बन जाता है । कुछ विद्वानों ने तो रीति कवियों की कविता में भक्ति भाव में विलास सर्जन का मन में नैतिकता के अभाव का द्योतक माना है तथा उनकी भक्ति को श्रृंगार का ही एक अंग मानते हुए उसकी व्याख्या करते हुए लिखा है कि, ''वह एक ओर सामाजिक कवच और दूसरी ओर मानसिक शरण भूमि के रूप में इस की रक्षा करती थी ।''[32]

गोविन्दगिल्ला भाई की भक्ति कविता में भी रीति कालीन भक्ति काव्य धारा का प्रत्यक्ष प्रभाव देखा जा सकता है । इनकी भक्ति परक रचनाओं में विशेष रूप से उल्लेखनीय, विष्णु विनय पच्चीसी, परब्रह्म पच्चीसी, भक्ति कल्पद्रुम रचना है जो गोविन्द ग्रंथ माला में संकलित हैं ।

गोविन्दगिल्ला भाई ने ईश्वर की परिकल्पना तीन रूपो में की है - निर्गुण, सगुण तथा अवतारी । निर्गुण ब्रह्म की उपासना को उन्होंने ''परब्रह्म पच्चीसी'' में स्वीकार किया है तो सगुणोपासना के लिए उनकी ''विष्णुविनय पच्चीसी''रचना देखी जा सकती है । इस रचना के लिए छंद विशेष रूप से द्रष्टव्य है -

सुंदर सुहाता महामंगल प्रदाता गुनि,
तीन लोक त्राता सर्व धरनी के धाता है ।
सर्व गुन ज्ञाता सर्व शक्तिमय माता गुनी ,
दुष्ट को डराता और भक्तन को भाता है ।
वाको जेही ध्याता सोई झूँठ को जराता ओर ,
परम प्रख्याता महा मोक्ष पद पाता है ।
''गोविन्द''कहत ऐसे विष्णु बरदाता मेरी,
बुद्धि को बढाता और विध्न को विलाता है ।[33]

परब्रह्म पच्चीसी ने ब्रह्म के स्वरूप की आख्यान उपनिषदों पर आधारित है यथा-

बानी ते प्रगट नाहिं, प्रगट है बानी जाते,
मन ते जानत नांहि जाते मन जाने है ।
दृष्टि ते दिखात नाहिं, देखत है दृष्टि जाते,

कान ते न सुने, जातें सुनत है काने है ।
प्रान ते न श्वास लहैं श्वास लहैं प्रान जातें,
ऐसे अद्‌भुत जाको वेद ही बखाने हैं ।
''गोविन्द'' कहत ऐसे निरगुन निगम ये,
परम परमात्मा सों मेरे मन माने हैं ।

किसी विशिष्ट धर्म सम्प्रदाय में निबद्ध होकर उन्होंने ऐकेश्वरवाद में विश्वास व्यक्त नहीं किया, वरन ''सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमो नमः''में उनकी अटूट आस्था थी । देवी, शंकर, विष्णु को समान आदर देते हुए उन्होंने शाक्त, शैव एवं वैष्णवी भक्ति को स्वीकारा था । किसी भी विशिष्ट मार्ग या सम्प्रदाय के प्रति उनका दुराग्रही रूझान नहीं था ।

भक्ति परक काव्य रचना के अतिरिक्त उन्होंने प्रशस्तिपरक स्फुट छंदों की भी रचनाएँ की थीं, जिन में अपने आश्रय दाताओं तथा राजा महाराजाओं, गुरूओं और रईशों की प्रशस्तियाँ हैं ।

अंत में कहाँ जा सकता है कि आचार्य कवि गोविन्दगिल्ला भाई ने शृंगार एवं भक्ति की समन्वित अविधारा को अपनी काव्य मंदाकिनी में प्रवाहित किया है। उन पर रीतिकालीन काव्य प्रवृत्ति का विशेष प्रभाव रहा है । उत्तर भारत की ब्रजभाषा कविता का प्रत्यक्ष प्रभाव उन पर रहा था, और उतरांचल के कवियों के सतत् सम्पर्क में भी वह रहे थे । यही कारण है कि तत्कालीन अधिकांश वरिष्ठ कवियों ने उनको सम्मान दिया था और अपने कृतित्व में इनका स्मरण किया है । हिन्दी साहित्य के इतिहास में भी अनेक अज्ञात तथा अल्पज्ञात कवियों की काव्य रचनाओं का अनुसंधान करके उन्होंने अपना अनन्य सहयोग प्रदान किया है ।

वैसे तो यहाँ विवेच्य विषय गोविन्दगिल्ला भाई द्वारा सम्पादित एवं संकलित उन पांडुलिपियों का विवेचन है जो गुजरात में प्राप्य है, किन्तु गोविन्दगिल्ला भाई के वरिष्ठ काव्य प्रदान की भी अपनी अहम भूमिका है जिसके द्वारा सम्पूर्ण भारतवर्ष में ख्यात हुए थे । परिमाण एवं स्तर दोनों ही दृष्टि से उनका काव्य सृजन सराहनीय रहा है । उनका विशिष्ट महत्व इस बात से भी है कि उन्होंने हिन्दी भाषी या ब्रजभाषा भाषी प्रान्त से बहुत दूर अहिन्दी भाषी प्रान्त सौराष्ट्र में रहकर काव्य रचना की थी और स्वयं भी ऐसे परिवार से सम्बन्धित थे जहाँ हिन्दी भाषा का व्यवहार नहीं होता था ।

गुजरात के सुदूर सौराष्ट्र प्रदेश में रहकर गुजराती भाषा के वातावरण में ब्रजभाषा के शास्त्रीय ज्ञान से जुड़कर उन्होंने जो वरिष्ठ काव्य सर्जना की वह अप्रतिम ही कही जायेगी ।

गोविन्दगिल्ला भाई द्वारा सम्पादित ग्रंथों का भी अनन्यतम महत्व है, इस का प्रमुख कारण यही है कि, एक तो उन्होंने जिन ग्रंथों का सम्पादन किया था उनकी मूल पांडुलिपियाँ सौराष्ट्र या गुजरात में प्राप्त नहीं हुई, वे पांडुलिपियाँ विभिन्न हिन्दी भाषी क्षेत्रों में ही उपलब्ध थीं। इस के लिए उन्होंने मूल सर्जकों एवं संग्रह कर्ताओं से सम्पर्क बनाया, इस संदर्भ में उनके कुछ साहित्यकार मित्रों ने भी सहयोग प्रदान किया। कुछ राजा महाराजाओं ने भी अपने निजी संग्रहों का उपयोग उन्हें करने दिया अथवा मूल आधार पूर्ति की दूसरी प्रतिलिपि कराके उन्हें उपलब्ध करायीं। इस प्रकार सौराष्ट्र जैसे अहिन्दी भाषी क्षेत्र में रहकर तथा अन्य हिन्दी भाषी साहित्यकारों से कटे रहकर भी उन्होंने अपनी लगन एवं समर्पित कर्मठ भावना से अपना शोधकार्य जारी रखा।

उन्होंने अधुनातम वैज्ञानिक सम्पादन प्रणाली के आधार पर ही अपना शोधकार्य अग्रसर किया और ग्रंथों के प्रामाणिक सम्पादित संस्करण तैयार किए थे। ''प्रेस कॉपी''भी तैयार कीं तथा विस्तृत भूमिका में उस ग्रंथ की उपादेयता तथा उसके विवेच्य विषय पर भी गवेषणात्मक चर्चा करके ग्रंथ को सम्पूर्णता प्रदान की थी।

ऐसे अनेकानेक अज्ञात एवं अल्पज्ञात कवियों के कृतित्व को उन्होंने उजागर किया जो साहित्य जगत में प्रकाशित नहीं हो पाए थे। मिश्रबन्धु विनोद के कर्ता मिश्र बन्धुओंने भी इस तथ्य को स्वीकार किया है कि गुजरात के गोविन्दगिल्ला भाई ने ''बन्धु विनोद'' हेतु सैंकड़ों अज्ञात कवियों के विवरण उन्हें उपलब्ध कराये थे। मथुरा के आचार्य कविरत्न नवनीतजी चतुर्वेदी, ग्वाल कवि तथा गोकुल के प्रेम कविने भी इन्हें पर्याप्त साहित्य सामग्री उपलब्ध कराई थी।

अपनी जिज्ञासा प्रशान्ति के लिए गोविन्दगिल्ला भाई ने सतत् यात्राए की थीं, इनकी यात्राओं का आशय साहित्य-ग्रंथों की गवेषणा तथा ब्रजभाषा साहित्यकारों से सम्पर्क था। मथुरा, आगरा, इलाहाबाद, बनारस, लखनऊ आदि स्थलों की उन्होंने अनेक बार यात्राएँ की थीं।

अगले अध्याय में गोविन्दगिल्ला भाई द्वारा सम्पादित ब्रजभाषा के उन हस्तलिखित ग्रंथों का विवरण प्रस्तुत किया जाएगा, जिनकी पांडुलिपियाँ गुजरात में ही प्राप्त हुई हैं और अधिकांश गोविन्दगिल्ला भाई द्वारा ही तैयार की गई है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. हरिश्चन्द्र ग्रंथावलि पृ.-117
2. प्राच्य विद्यापीठ - म.स.वि बंध सं. 200 निजी संग्रह पृ.-7
3. गोविंद हजारा ग्रंत सं. 203 पृ.-15
4. गोविंद हजारा - मंगला चरण से
5. स्मरण पोथी-बंध-199 ग्रं. 6
6. कवि चरित्र तथा कवि नामावली बंध-201
7. स्मरण पोथी. पृ.-31
8. स्मरण पोथी. पृ.-73
9. स्मरण पोथी - 64
10. लघु डायरी 18.6
11. स्मरण पोथी 34-35
12. हिन्दी सम्पन्न, पांडुलिपि विभाग म.स.यु.
13. हिन्दी विभाग प्राच्य विद्यामंदिर, पांडुलिपि विभाग म.स.यु. बड़ौदा
14. आ. कवि गोविन्दगिल्ला भाई डॉ. मालारविंद्रम. 178
15. स्मरण पोथी, पृ. - 63
16. मिश्रबन्धु विनोद भाग 3
17. गुजरात की हिन्दी काव्य परम्परा और आचार्य कवि गोविन्द गिल्लाभाई - डॉ. मालारविन्दम् पृ. - 37
18. गुजरात की हिन्दी काव्य परंपरा और आचार्य कवि गोविन्दगिल्ला भाई - डॉ. मालारविन्दम् पृष्ठ 360
19. A History of Sanskrit Literature, Dr. A.B. Keith - Page - 39
20. देव और उनकी कविता - डॉ. नगेन्द्र पृष्ठ - 86
21. Fashion in Love; Aldues Hurley- Page - 132
22. दरबारी संस्कृति और हिन्दी मुक्तक, डॉ. त्रिभुवनसिंह, पृष्ठ - 90
23. अष्टछायेतर पुष्टिमार्गीय कवि -डॉ. अक्षयकुमार गोस्वामी-पृष्ठ-112
24. गोस्वामी हरिरायजी और उनका व्रजभाषा साहित्य डॉ. विष्णु चतुर्वेदी पृष्ठ-93

25. हिन्दी काव्य में श्रृंगार परंपरा और महा कवि बिहारी, डॉ. गणपतीचंद्र गुप्त पृष्ठ-61
26. गोस्वामी हरिरायजी का व्रज भाषा साहित्य - डॉ. विष्णु चतुर्वेदी पृष्ठ-92
27. बिहारी - आचार्य विश्वनाथ मिश्र - पृष्ठ - 27
28. हिन्दी रीति साहित्य- डॉ. भगीरथ मिश्र, पृष्ठ - 25
29. किसन बावनी-गोविन्दगिल्ला भाई छंद संख्या -30
30. हिन्दी साहित्य का वृहद् इतिहास, षष्ठ भाग डॉ. नगेन्द्र, पृष्ठ - 227
31. हिन्दी साहित्य कोश-पृष्ठ-538
32. हिन्दी साहित्य का वृहद् इतिहास- डॉ.नगेन्द्र - पृष्ठ भाग-216
33. गोविन्द ग्रंथ माला, पृष्ठ - 23 विष्णु विनय पच्चीसी छंद - 1